शैक्षिक निर्देशन :- बालकों को उनके व्यक्तित्व के विकास हेतु समायोजनात्मक समस्याओं के समाधान हेतु एवं उनके लक्ष्य बताने हेतु निर्देशन का कार्य किया जाता है।

* शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में विद्वानों ने इसका वर्गीकरण औपचारिक शिक्षा की पद्धति के आधार पर किया जाता है।

(1) प्राथमिक विद्यालयों में निर्देशन :- अमेरिका में सर्वप्रथम प्राथमिक विद्यालयों में निर्देशन की योजना प्रारम्भ हुई तो वर्तमान समय में भी कार्यरत है।

⇒ निर्देशन के प्राथमिक विद्यालयों में बालकों के विभिन्न अनुभवों के द्वारा विविध पक्षों को ज्ञात कराकर आगे आने वाले उनके जीवन के लिए स्तर प्रदान किया जाता है।

प्राथमिक विद्यालय में निर्देशन की आवश्यकता :- प्रा० विद्यालयों में निर्देशन का महत्व किसी भी बालक के सकारात्मक उद्देश्यों के विकास हेतु आवश्यक होता है।

* बालक जैसे-जैसे अपने जीवन काल में विकासित होता जाता है। अनेक समायोजनात्मक समस्याएँ, त्रुटि पूर्ण आदतें, संवेगिक संकट आदि की उत्पत्ति उसके जीवन काल में होने लगती है। जिसके समस्याओं के समाधान हेतु निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है।

कुछ समय पश्चात प्राथमिक कक्षा के बालकों को माध्यमिक कक्षा के शैक्षिक एवं व्यावसायिक महत्व को समझने तथा उसे समझने में सामर्थ्य को विकासित करने के लिए शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता होती है।

प्राथमिक विद्यालय में निर्देशन के कार्य :- प्राथमिक विद्यालयों में परिस्थितियों के प्रति कुसमायोजन की दशा से बचाव के लिए निर्देशन के निम्नलिखित कार्यों को बताया है।

Scanned with CamScanner

(1) अध्यापकों, माता-पिता, निर्देशन कर्मियों, एवं विद्यालय के कर्मचारियों के मध्य सहयोग के आधार पर छोटे बच्चों में संवेगीक समस्याओं से बचाव करना।

(2) जब किसी बालक का अधिगम किसी विशिष्ट क्षेत्र में दोषपूर्ण हो जाये तो बालक संवेगिक समस्याओं के कारण को जानकर बालक को सहायता देना।

(3) विद्यालय के अन्दर ऐसे परिवेश का निर्माण करना जो बालक को अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त के अवसर प्रदान करे।

(4) फिल्म और टी०वी० के पात्रों के माध्यम से बालकों के अन्दर पनपने वाले, अनुचित अवांछित लक्षणों के बारे में बालकों से परामर्श करके जीवन की वास्तविकता से जोड़ना।

(5) विद्यालय में गृहकार्य की अधिकता से परेशान बालकों में उत्पन्न शैक्षिक अरुचि की रोकथाम करना।

माध्यमिक शिक्षा में निर्देशन :- निर्देशन की प्रक्रिया एक क्रमिक तथा सतत् प्रक्रिया है, जहाँ पर प्राथमिक स्तर के पश्चात बालक माध्यमिक स्तर में प्रवेश करता है।

* माध्यमिक कक्षाओं में निर्देशन के विभिन्न क्षेत्रों की दृष्टि से निर्देशन आवश्यकताओं का विस्तार हो जाता है। तथा यह अवस्था किशोरावस्था की होती है। इसलिए बालकों के शिक्षा क्षेत्र में चयन का प्रश्न उठता है।

* इस समय विद्यार्थियों को शैक्षिक विकल्पों के चयनों में अपनी रुचियों क्षमताओं एवं विशेषताओं के अतिरिक्त व्यावसायिक संकल्पनाओं के लिए भी निर्देशन का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है।

Emotion —
- संवेग → इसमें (हँसने या रोने की) तीव्रता अधिक होती है।
- भाव → इसमें तीव्रता कम होती है।

संवेगात्मक द्वन्द्व → एक साथ हँसना और रोना

---

* माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को मुख्य रूप से निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएँ समायोजन के लक्ष्यों से जुड़ी होती है। क्यों कि उनमें संवेगात्मक अस्थिरता का प्रदर्शन अपेक्षाकृत अधिक होता है।

* माध्यमिक कक्षा में शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

(1) शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताएं :- माध्यमिक विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशन से सम्बन्धित आवश्यकताओं के अन्तर्गत विद्यालयीय समायोजन, अधिगम समस्याएँ, विषय सम्बन्धी विकल्प, विद्यालय चयन समस्या तथा, शिक्षा बनाम व्यवसाय जैसे - निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है।

* माध्यमिक स्तर पर बालकों पर अपनी कक्षाओं के अतिरिक्त पुस्तकालयों एवं विभिन्न प्रकार की प्रयोगशालाओं से भी समायोजित होना पड़ता है।

* इस हेतु उन्हे पढ़ने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। भाषायिक त्रुटियां होती है। विभिन्न विषयों रुची अरुची होती है। जिस कारण उन्हे निर्देशन की जरूरत होती है।

(2) व्यक्तिगत विकास सम्बन्धी आवश्यकताएं :- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यक्तिगत विकास के क्षेत्र में सामाजिक परिपक्वता एवं सामाजिक विकास से सम्बन्धित निर्देशन की मुख्य रूप से आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner

NIOS - National School Institute of Open School

* माध्यमिक शिक्षा में सामाजिक परिपक्वता, विजातीय, लिंगी की आकर्षण विभिन्न शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन इत्यादि के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है।

* इस स्तर पर विद्यालय के अन्दर पुस्तकालय प्रयोगशाला तथा सहपाठी इत्यादि जबकि, बाहर, खेलकूद, कला एवं अन्य क्षेत्रों में समायोजन के लिए व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता होती है।

उच्चशिक्षा में निर्देशन :- उच्च शिक्षा के स्तर में विद्यार्थियों को शिक्षण संस्थाओं के विषय में सही तथा उचित सूचना की आवश्यकता होती है। स्नातक स्तर के छात्रों को परास्नातक कक्षा में पाठ्यक्रमों के चयन के लिए प्रवेश प्रणाली की सुविधा के लिए ढांचागत संरचना के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है।

* वर्तमान पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अनेक विशिष्टताएं भी उपलब्ध होती है। ऐसे विकल्पों के प्रकट होने पर निर्देशन की जरूरत होती है।

* उच्च शिक्षा में भौतिक संरचना उपलब्ध संसाधन स्थापना सेवा (उस समय की सुविधाएँ) इत्यादि की जानकारी के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है।

* उच्च स्तर पर कई बार कुछ तथ्यों के आधार पर स्वीकृति ना कर पाने कारण बच्चों में समायोजनात्मक प्रक्रिया खड़ी होती है। इस कारण भी निर्देशन की आवश्यकता होती है।

* उच्च स्तरीय विद्यार्थियों के लिए निर्देशन एवं प्रमुख व्यवसायों के चुनावों का क्षेत्र होता है, जहाँ पर उन्हे रोजगार उपलब्ध के लिए नवीन तथ्यों की जानकारी के लिए एवं विभिन्न प्रकार की पाठ्यक्रमों एवं कोर्सों के लिए निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है।

Scanned with CamScanner